कालरिज –कल्पना और फैन्सी

कालरिज अंग्रेजी साहित्य के स्वच्छन्तावादी आन्दोलन के प्रेणताओं में से एक है। कालरिज और वर्डसवर्थ ने पहली बार एक साथ मिलकर 1798 में लिरिकल वैलड्स का सम्पादन किया था। लेकिन कल्पना पर विशद विचार कालरिज ने अपनी पुस्तक बायोग्राफिया लिट्रोरिया में किया है। उन्होंने लिखा है –

Finally good sense is the body of Poetic genius, fancyits drapery, motion its life and imagination the Soul that is everywhere and in each, and forms all into one graceful and intelligent whole "

अर्थात अन्ततोगत्वा विवेक शक्ति काव्यात्मक प्रतिभा का शरीर है, अनुमान शक्ति उसका वस्त्र, भावावेश उसका जीवन है तथा कल्पना शक्ति ही वह आत्मा है जो कि सर्वत्र होती है तथा समस्त तत्वों को एक सुन्दर एवं बोधगम्य रूप प्रदान करती है।

स्पष्टतः कालरिज ने कल्पना को यहाँ अत्यधिक महत्व प्रदान किया है। 18 वीं सदी में fancey को Creative तथा Imagination को अनुकरणात्मक माना जाता था। कालरिज ने इसका अर्थ बदल दिया इन्होंने कल्पना के दो रूप माना प्राथमिक और गौण।

प्राथमिक कल्पना जीवन शक्ति है,और सभी प्रकार के मानवीय ज्ञान की बुनियादी ज्ञान की बुनियादी शक्ति भी है। समस्त जागतिक प्रपंच को व्यवस्थित रूप में ग्रहण कराने वाली शक्ति को ही कालरिज मुख्य कल्पना कहते हैं। मुख्य कल्पना का एक कार्य संयोजन या एका स्थापित करना है। यह परस्पर विरोधी तत्वों के संबंधों को बोध भी कराती हैं। प्राकृतित्व दृश्यों में रूप व्यवस्था और सौन्दर्य का बोध प्राथमिक कल्पना ही कराती है। कल्पना का कालरिज के अनुसार मनुष्य के सारे किया कलाप से संबंध रहता है।

कालरिज ने कल्पना के स्वरूप की व्याख्या करते हुये काव्य और गद्य दोनों में अलग–अलग भूमिकाओं की चर्चा की है। प्रकृति से सम्बंध बनाते हुये समय कल्पना की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

कल्पना कई विरोधी तत्वों के बीच सामंजस्या और सन्तुलन स्थापित करने का कार्य करती है –

1. सामान्य और मूर्त के बीच
2. विचार ओर विम्ब
3. वैयक्तिक और प्रतिनिधिक
4. नवीनता और ताजगी के बोध के साथ प्राचीन और परिचित के बोध के बीच।

Scanned by CamScanner

5. भावानाओं के आवेग और संयम के बीच
6. आत्मबोध के निर्णय और गहरी अनुभूति के बीच ।
7. प्राकृतिक और कृत्रिम के बीच
8. कला और प्रकृति के बीच
9. शक्ति और पदार्थ के बीच
10. कविता की प्रशंसा और कविता के लगाव के बीच
11. कल्पना भावों का विकास भी करती है। भावना में प्रसार की क्षमता कल्पना से आती है। ज्ञात की अज्ञात संभावनाओं का बोध कराना कल्पना की बुनियादी विशेषता है। कल्पना अन्वेषण और अविष्कार की शक्ति है। कल्पना जैसी हुबहू चर्चा तो भारतीय काव्य शास्त्र में नहीं मिलती पर काव्य हेतुओं की चर्चा में प्रतिभा का जो लक्षण दिया गया है। वह कल्पना से काफी मिलती जुलती है। कल्पना ही विभाव आदि का समन्वित बोध कराती है। कवि के जगत भेद्य में कल्पना की जगत होती है। शब्दों में अर्थ का निर्माण ओर विकास भी कल्पना करती है। विम्ब के निर्माण में भी कल्पना की गहरी भूमिका होती है। प्रतीकों के अन्वेषण के साथ अर्थ की संभावना की खोज भी कल्पना करती है। अलंकारो के संयोजन में कल्पना की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी कवि की कल्पना कई बार उसकी विचारधारा का अता–पता एवं देशकाल को भी बोध कराती है।

मुख्य और गौण कल्पना :–

समस्त जागतिक प्रपंच को व्यवस्थित रूप में ग्रहण कराने वाली शक्ति को कालरिज मुख्य कल्पना कहते हैं। मुख्य कल्पना वस्तु जगत की एक वस्तु को ठीक ठिकाने ढंग से मन में अंकित करती है। सजीवता एवं कियाशीलता में गौण कल्पना के समान ही होती है। वह भी ऐन्द्रिय संवेदनाओं की अस्त व्यस्तता को दूर कर उनमे व्यवस्था लाती है किन्तु दोनो में अन्तर यह है कि मुख्य कल्पना का काम सहज भाव से अनजाने ढंग से चलता रहता हैं। जबकि गौण कल्पना का कार्य ज्ञानपूर्वक एवं इच्छापूर्वक होता है। मुख्य कल्पना केवल प्रत्याशित है जबकि गाण कल्पना आत्मा बुद्धि ज्ञानेन्द्रियों, इच्छा भाव आदि सबकी सहायता लेती हुयी कला सृजन में प्रवृत्त होती है।

मुख्य कल्पना के अस्तित्व पर ही गौण कल्पना आश्रित है। अर्थात् मुख्य कल्पना द्वारा संचित सामग्री की ही गौण कल्पना काव्य के लिये उपयोग करती है। अतः गौण कल्पना को काव्यात्मक कल्पना भी कह सकते है। कहा जा सकता है कि मुख्य कल्पना पूर्ववर्ती होती है और गौण कल्पना पश्चातवर्ती ।

मुख्य कल्पना अचेतन और अनैच्छिक है ,जबकि गौण कल्पना चेतन और ऐच्छिक । तात्पर्य यह है कि मुख्य कल्पना हमारे विना चाहे तथा विना जाने भी कार्य करती है

Scanned by CamScanner

किन्तु गौण कल्पना हमारी जानकारी में और हमारे चाहने पर ही काम करती है। कवि की इच्छा और ज्ञान के विना काव्य रचना काव्य रचना नहीं हो सकती है।

मुख्य कल्पना केवल निर्माण या संघटन करती है। इसके प्रतिकूल गौण कल्पना विघटन और संघटन, विनाश और निर्माण दोनों करती हैं। वाहय जगत की वस्तुओं का ज्यों का ज्यों प्रयोग काव्य में नही होता। कवि आवश्यकतानुसार उसमें परिवर्तन करता हैं। कुछ जोड़ता है कुछ घटाता है। मुख्य कल्पना में ऐस नहीं होता।

फैन्सी ;थ्ंदबल द्ध

स्वच्छन्छतवाद के पूर्त कल्पना और फैन्सी को एक दूसरे का पर्यायवाची माना जाता था। यद्यपि ड्राइडन ने कल्पना और फैन्सी में कल्पना को महत्वपूर्ण माना था। लेकिन वर्डस वर्थ और कालरिज ने इनमें अंतर माना। 1815 के लिरिकल वैलेड्स की भूमिका में वर्डसवर्थ ने फैन्सी को संघटित और सहचर्य शक्ति से जुड़ा हुआ माना। फैन्सी के बारे मे कालरिज ने वायोग्राफिया लिट्ररेरिया के अध्याय 13 में लिखा है।

**The fancy is indeed no other than a mode of memory emancipated from the order of time space ".

यहाँ स्पष्ट है कि कालरिज फैन्सी की स्मृति से जोड़कर देखते है। यद्यपि ज्ण् म्सपवज ने अपने निबन्ध Metaphysical Poets (1921) में यह प्रश्न खड़ा किया कि फैन्सी में स्मृति सक्रिय नहीं रहती बल्कि कल्पना में भी वह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

निश्चय ही फैन्सी को देशकाल के बन्धन से मुक्त एक प्रकार से स्मृति मात्र माना गया है। वह स्मृति इच्छा शक्ति से संचालित एवं रूपान्तरित होती है। वह अपने उपयोग की सामग्री साहचर्य नियम से ग्रहण करती है। उसकी सामग्री स्थिर तथा सुनिश्चित होती है।

फैन्सी और कल्पना का अन्तर मात्रात्मक ही नहीं गुणात्मक है। फेंसी विम्बों को केवल पास–पास रख देती है। उनमें कोई परिवर्तन नहीं करती है किन्तु कल्पना उन्हें विघटित विगलित कर नये रूपर में ढाल देती है। पूर्णतः रूपान्तरित कर देती है।

कल्पना भावोद्दीपन को केन्द्र में रखकर विम्बों में आन्तरिक सामंजस्य स्थापित करतो है। उनमें एकरूपता लाती है किन्तु फेंसी केवल स्थिर ओर निश्चित वस्तुओं तथा विचारो को काम में लाती है। और सहचर्य नियम के अनुसार उन्हें एकत्र कर देती है।

Scanned by CamScanner

कल्पना अन्तः प्रेरणा प्रत्यक्ष आदि अनेक स्रोतों से सामग्री वस्त्र ग्रहण करती है किन्तु फैन्सी प्रधानतः स्मृति पर निर्भर करती है और उसी से अपनी सामग्री ग्रहण करती है।

कल्पना की कार्य पद्धति जैव है। अतः उसमें जीवंतता और पूर्णता है किन्तु फैंसी की कार्य पद्धति यांत्रिक है अतः वह निर्जीव तथा असंगत है।

कल्पना और फैंसी में चाहे जितने भी अन्तर हो लेकिन रचना प्रक्रिया इन दोनों का उपयोग करती है। उसके लिये ये आवश्यक है। कालरिज ने ' वार्योग्राफिया लिट्रटेरिया ' में इस पर विचार किया है। दरअसल यह पुस्तक ही कालरिज को महत्वपूर्ण स्थान दिलाती है। उसके बारे में यह कहावत चलती है कि अरस्तू आलोचना का गणितज्ञ है तो कालरिज उसका प्रथम पुरोहित ।

Scanned by CamScanner